BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

झारखण्ड की कला और संस्कृति में डॉ रामदयाल मुंडा का योगदान

महेश कुमार दुबे
शोधार्थी
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय,
धनबाद, झारखण्ड

सारांश

डॉ. रामदयाल मुंडा झारखंड की कला और संस्कृति के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण नाम हैं। वे न केवल एक प्रसिद्ध आदिवासी नेता थे, बल्कि आदिवासी संस्कृति, कला, और लोक साहित्य के प्रति उनके योगदान ने राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को प्रबल किया। डॉ. मुंडा का जीवन और कार्य झारखंड की आदिवासी पहचान को उजागर करने में महत्वपूर्ण रहा है। डॉ. रामदयाल मुंडा ने आदिवासी समुदाय की संस्कृति, भाषा और परंपराओं को संरक्षित करने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने आदिवासी लोक कला और संस्कृति के महत्व को समाज में फैलाया। उनकी काव्य रचनाओं और लेखन ने झारखंड के आदिवासी जीवन को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया, जिससे राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को एक नया आयाम मिला। उन्होंने आदिवासी कलाओं, जैसे पटचित्र, बांस कला, और लोक नृत्य, को प्रमोट किया और इनके महत्व को रेखांकित किया। उनके कार्यों में सबसे महत्वपूर्ण था आदिवासी शिक्षा और संस्कृति को सशक्त बनाना। वे आदिवासी समाज के लिए एक आदर्श थे, जिन्होंने झारखंड के आदिवासी युवाओं को अपनी जड़ों से जुड़ने और अपनी संस्कृति को पहचानने के लिए प्रेरित किया। उनका योगदान झारखंड की लोक कलाओं और आदिवासी जीवनशैली को समाज के मुख्यधारा में लाने के रूप में देखा जाता है। डॉ. रामदयाल मुंडा ने आदिवासी समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया। उनके द्वारा की गई मेहनत और योगदान ने झारखंड की सांस्कृतिक धरोहर को न केवल संरक्षित किया, बल्कि उसे विश्व स्तर पर पहचान दिलाई। उनके कार्यों से यह सिद्ध होता है कि वे झारखंड की कला और संस्कृति के सशक्त संवर्धक रहे हैं।

कुंजी शब्द – डॉ. रामदयाल मुंडा, कला एवं संस्कृति, झारखण्ड ।

❖ झारखण्ड की कला एवं संस्कृति

झारखंड, जो अपनी समृद्ध आदिवासी संस्कृति और विविधता के लिए प्रसिद्ध है, यहाँ के त्योहारों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य के लोग त्योहारों को न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से मनाते हैं, बल्कि ये उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा भी होते हैं। यहाँ के त्योहार उनके सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हैं और समाज में एकता और भाईचारे को बढ़ावा देते हैं। त्योहारों का झारखंड की संस्कृति में अत्यधिक प्रभाव है, क्योंकि ये न केवल मनोरंजन का साधन होते हैं, बल्कि विभिन्न समुदायों की परंपराओं और रीति-रिवाजों को भी संरक्षित रखते हैं। झारखंड में मुख्य रूप से आदिवासी समुदायों का वास है, और इन समुदायों के त्योहार उनकी जीवनशैली, कृषि कार्यों और प्रकृति से जुड़ी परंपराओं का हिस्सा होते हैं। यहाँ के त्योहार कृषि आधारित होते हैं और इनका उद्देश्य प्राकृतिक तत्वों, जैसे कि सूर्य, वर्षा, और धरती के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना होता है। इन त्योहारों के दौरान आदिवासी समाज के लोग समूहों में एकजुट होकर नृत्य, संगीत और पूजा अर्चना करते हैं, जिससे उनके समुदाय में एकता और समरसता बढ़ती है। झारखंड के अधिकांश त्योहार कृषि कार्यों से जुड़ी होती हैं। एक प्रमुख त्योहार "सरहुल" है, जो

@2025 Bihar Shodh Samaagam

संथाल समुदाय द्वारा मनाया जाता है। यह त्योहार नए फसल के स्वागत में मनाया जाता है और इसमें प्रकृति की पूजा की जाती है। सरहुल पर्व के दौरान लोग अपने घरों के आंगन में वृक्षारोपण करते हैं और धरती की उपजाऊ शक्तियों को सम्मानित करते हैं। इसी तरह, "माघी पुन्नी" और "छठ पूजा" जैसे त्योहारों में भी सूर्य देवता की पूजा की जाती है, जो कृषि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। झारखंड में आदिवासी समुदायों के अलावा अन्य धार्मिक समुदाय भी रहते हैं। यहाँ के लोग हिंदू त्योहारों को भी धूमधाम से मनाते हैं, जिनमें "होली", "दीवाली", "रक्षाबंधन" और "दशहरा" प्रमुख हैं। खासकर "झारखंडी होली" में आदिवासी समाज और गैर-आदिवासी समाज मिलकर एक साथ रंगों का त्योहार मनाते हैं, जो सामाजिक सामंजस्य का प्रतीक है। इसके अलावा, "देवघर में बाबा बैद्यनाथ का मेला" और "कुल्हा पर्व" जैसे धार्मिक आयोजनों में हजारों लोग एकत्रित होते हैं और यह राज्य की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं। त्योहारों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य समाज में एकता और भाईचारे का वातावरण बनाना है। विभिन्न जाति, धर्म, और पंथों के लोग मिलकर इन त्योहारों का आनंद लेते हैं। विशेष रूप से आदिवासी और गैर-आदिवासी समुदायों के बीच इन त्योहारों के दौरान एकता और सहयोग का एहसास होता है। जैसे "चैती छठ" त्योहार में परिवार और समाज के लोग एक साथ मिलकर पूजा अर्चना करते हैं और पानी में खड़ा होकर सूर्य देवता से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, यह परंपरा समाज में एकजुटता का प्रतीक है। झारखंड में त्योहारों का महत्व केवल धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक है। ये त्योहार न केवल लोगों के बीच रिश्तों को प्रगाढ़ करते हैं, बल्कि आदिवासी समाज की परंपराओं और रीति-रिवाजों को भी जीवित रखते हैं। इसके अलावा, ये त्योहार झारखंड की सांस्कृतिक विविधता, समृद्धि और एकता का प्रतीक हैं, जो राज्य की समग्र पहचान को मजबूत करते हैं। इन त्योहारों के माध्यम से लोग अपनी संस्कृति, परंपराओं और प्राकृतिक शक्तियों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं, जो झारखंड की असली धरोहर है।

❖ **डॉ. रामदयाल मुंडा का झारखंड की कला और संस्कृति में योगदान**

डॉ. रामदयाल मुंडा झारखंड के एक प्रसिद्ध समाजसेवी, आदिवासी अधिकार कार्यकर्ता, और लेखक थे। उनका जन्म 1948 में हुआ था, और वे आदिवासी समाज के एक महत्वपूर्ण नेता थे। उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी आदिवासी समाज के उत्थान, उनकी शिक्षा, उनके अधिकारों की रक्षा और उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में समर्पित की। वे समाज के हाशिए पर रहने वाले आदिवासी समुदाय की आवाज बने और उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया। डॉ. मुंडा का आदिवासी समाज से गहरा जुड़ाव था, और वे इसे अपनी सांस्कृतिक धरोहर और पहचान के रूप में देखते थे। उनके दृष्टिकोण में, "झारखंड की कला और संस्कृति न केवल आदिवासी समाज की पहचान को व्यक्त करती थी, बल्कि यह राज्य की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी थी। रामदयाल मुंडा ने झारखंड की कला और संस्कृति को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए।"[1]

डॉ. मुंडा का मानना था कि आदिवासी संस्कृति, परंपराएँ और कला विधाएँ तेजी से विलुप्त हो रही थीं, खासकर औद्योगिकीकरण और बाहरी प्रभावों के कारण। वे चाहते थे कि "आदिवासी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया जाए और यह पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित हो। उन्होंने आदिवासी कला, शिल्प, संगीत, और नृत्य को बढ़ावा देने के लिए कई मंचों का आयोजन किया और इस दिशा में कई परियोजनाओं की शुरुआत की।"[2]

डॉ. मुंडा का यह मानना था कि "आदिवासी कला और संस्कृति उनके अस्तित्व और पहचान का अहम हिस्सा हैं। उन्होंने आदिवासी समाज के लोगों को उनके सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों पर गर्व महसूस कराया। कला और संस्कृति के माध्यम से उन्होंने आदिवासी लोगों को आत्मसम्मान और गौरव का एहसास कराया।"[3] डॉ. मुंडा ने यह महसूस किया कि आदिवासी कला

@2025 Bihar Shodh Samaagam

और शिल्प को वैश्विक पहचान दिलाकर आदिवासी समुदाय के आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है। उन्होंने बांस और लकड़ी से बनी हस्तशिल्प वस्तुएं, पेंटिंग्स, और अन्य कला रूपों को बढ़ावा दिया, ताकि आदिवासी समुदाय के लोग अपने उत्पादों को बाजार में बेच सकें और आर्थिक रूप से सशक्त हो सकें। डॉ. मुंडा ने आदिवासी साहित्य को भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने आदिवासी भाषाओं में लिखी गई काव्य रचनाओं, कहानियों और गीतों को प्रकाशित करने का काम किया। उनका मानना था कि "आदिवासी साहित्य को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लाकर आदिवासी समाज की पहचान को एक नया रूप दिया जा सकता है।"[4] डॉ. मुंडा ने यह सुनिश्चित किया कि आदिवासी कला और संस्कृति को केवल आदिवासी समाज के भीतर ही नहीं, बल्कि पूरे राज्य और देश में लोकप्रिय किया जाए। उनका मानना था कि कला और संस्कृति के माध्यम से विभिन्न जातीय समूहों और समुदायों के बीच एकता और समरसता को बढ़ावा दिया जा सकता है। डॉ. रामदयाल मुंडा ने झारखंड की कला और संस्कृति को प्रोत्साहित करने में एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उनका मुख्य उद्देश्य आदिवासी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना, आदिवासी लोगों को उनकी पहचान पर गर्व महसूस कराना और उनके अधिकारों के लिए आवाज उठाना था। उनके प्रयासों के कारण आज झारखंड की कला, संस्कृति और आदिवासी परंपराएँ न केवल राज्य में बल्कि पूरे देश और विदेश में सम्मानित हैं। डॉ. मुंडा का योगदान हमेशा झारखंड की सांस्कृतिक विरासत के रूप में जीवित रहेगा।

डॉ. रामदयाल मुंडा झारखंड के एक महान समाजसेवी, लेखक, और आदिवासी अधिकारों के प्रमुख पक्षधर थे। उनका योगदान झारखंड की कला, संस्कृति और समाज के उत्थान में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। डॉ. मुंडा ने आदिवासी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षितकरने,समाज में उनकी स्थिति को सुधारने और उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए जीवनभर संघर्ष किया। उनके कार्यों का प्रभाव झारखंड की कला और संस्कृति पर गहरा पड़ा, और उनकी विरासत आज भी राज्य के कला और सांस्कृतिक परिदृश्य में जीवित है। डॉ. रामदयाल मुंडा का मुख्य उद्देश्य आदिवासी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को बचाना और उसे प्रोत्साहित करना था। उन्होंने आदिवासी लोक कला, संगीत, नृत्य, और शिल्पकला को पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। झारखंड की आदिवासी संस्कृति को संरक्षित करने के लिए उन्होंने कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने आदिवासी समाज की कला और संस्कृति को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत किया, जिससे राज्य के अन्य हिस्सों में भी आदिवासी सांस्कृतिक परंपराओं की सराहना हुई।

डॉ. मुंडा ने आदिवासी शिल्पकला और लोक कला को प्रोत्साहित किया। वे बांस, लकड़ी, मिट्टी और अन्य पारंपरिक सामग्री से बनी आदिवासी शिल्प वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे थे। उनका मानना था कि "इन कलाओं के माध्यम से न केवल आदिवासी समाज की पहचान बढ़ेगी, बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से भी सशक्त किया जा सकेगा।"[5] वे आदिवासी कलाकारों के लिए मंच प्रदान करने के पक्षधर थे, ताकि उनकी कला को एक व्यापक पहचान मिल सके। डॉ. रामदयाल मुंडा ने आदिवासी साहित्य को भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने आदिवासी लेखकों और कवियों के कार्यों को प्रमोट किया और उनकी काव्य रचनाओं को समाज के सामने लाने का प्रयास किया। उनकी कोशिशें आदिवासी भाषाओं और साहित्य को बचाने और उनका प्रचार-प्रसार करने की दिशा में थीं। उनकी पुस्तकें और लेख आदिवासी समाज की संस्कृति, जीवनशैली और संघर्षों को प्रकट करते थे। डॉ. मुंडा ने झारखंड के पारंपरिक लोक संगीत और नृत्य शैलियों को संरक्षित करने और उन्हें बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से "झूमर" और "छऊ"[6] जैसे पारंपरिक नृत्य शैलियों को प्रमोट करने के लिए उन्होंने कई मंचों का आयोजन किया। इन नृत्य शैलियों के माध्यम से उन्होंने आदिवासी समाज की परंपराओं और संस्कृति को प्रदर्शित किया और इन शैलियों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलवाई। डॉ. रामदयाल मुंडा ने न केवल कला और संस्कृति को बढ़ावा दिया,

@2025 Bihar Shodh Samaagam

बल्कि आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए भी कड़ा संघर्ष किया। उन्होंने आदिवासी समुदाय के लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किया और उनके सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की रक्षा के लिए काम किया। वे आदिवासी समाज के उत्थान के लिए निरंतर सक्रिय रहे और उनके हक की लड़ाई को एक प्रभावी स्वर दिया।[7] डॉ. रामदयाल मुंडा ने झारखंड की कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह अनमोल है। उन्होंने आदिवासी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया, उनकी परंपराओं को सम्मानित किया और समाज में उनकी पहचान को मजबूत किया। उनका काम आज भी झारखंड की सांस्कृतिक धारा का अहम हिस्सा है, और उनकी विरासत को आगे बढ़ाना आवश्यक है। उनके प्रयासों ने झारखंड के कला और सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध किया और आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान को स्थापित किया।

❖ **डॉ. रामदयाल मुंडा के कला एवं संस्कृति विषेयक योगदानो की वर्त्तमान समय में प्रासंगिकता**

रामदयाल मुंडा एक प्रसिद्ध आदिवासी नेता, समाज सुधारक और झारखंडी संस्कृति के महान प्रचारक थे। उन्होंने हमेशा आदिवासी समुदायों के उत्थान के लिए काम किया और झारखंड की सांस्कृतिक धरोहर को सम्मानित किया। मुंडा जी का मानना था कि झारखंड की संस्कृति अपनी अद्वितीयता और विविधता में एक अनुपम धरोहर है। उनका जीवन, कार्य और विचार आज भी झारखंडी समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

झारखंडी संस्कृति की जड़ें; रामदयाल मुंडा ने हमेशा यह माना कि झारखंड की संस्कृति प्रकृति, धर्म, परंपरा और आदिवासी जीवन शैली से गहरे जुड़े हुए हैं। यहाँ के लोग प्रकृति को पूजा करते हैं और उसकी संतुलन बनाए रखने की कोशिश करते हैं। वे आदिवासी परंपराओं को सम्मान देते हुए मानते थे कि यदि इन परंपराओं को सही तरीके से संरक्षित किया जाए, तो इनका प्रभाव न केवल झारखंड बल्कि समग्र भारत और विश्व पर भी पड़ सकता है। झारखंड के आदिवासी लोग अपनी परंपराओं में गहरे रूप से विश्वास करते हैं, जिसमें सादगी, अहिंसा, सामूहिकता और सृजनशीलता की भावना शामिल है। मुंडा जी का कहना था कि इस संस्कृति की जड़ें बहुत गहरी हैं और इसे संजोकर रखने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि जब तक आदिवासी अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़े रहेंगे, तब तक उनका अस्तित्व बना रहेगा।

- **संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता:** रामदयाल मुंडा ने संस्कृति के संरक्षण को बहुत महत्व दिया। वे जानते थे कि आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव और विकास के नाम पर आदिवासी संस्कृति की ओर बढ़ती उपेक्षा, इसे नष्ट कर सकती है। इसलिए, उन्होंने हमेशा आदिवासी संस्कृति के संरक्षण के लिए आवाज उठाई। मुंडा जी ने आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय की आवश्यकता को महसूस किया, ताकि यह समुदाय अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए समाज में सम्मान पा सके। वे हमेशा यह कहते थे कि आदिवासी लोगों को अपनी संस्कृति और भाषा पर गर्व होना चाहिए। इस संदर्भ में उन्होंने अपनी संस्कृति की शिक्षा को विद्यालयों और समुदायों तक पहुँचाने के लिए कई कार्यक्रमों का आयोजन किया। उनका मानना था कि यह सिर्फ आदिवासी समाज के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए फायदेमंद होगा क्योंकि इससे भारतीय संस्कृति की विविधता को समझने का अवसर मिलेगा।
- **झारखंडी जीवनशैली और समाज;** रामदयाल मुंडा ने झारखंडी जीवनशैली को हमेशा उसकी सादगी, प्राकृतिकता और सामूहिकता के कारण सराहा। उनके अनुसार, झारखंड के आदिवासी लोग हमेशा अपनी सामूहिकता की भावना को महत्व देते हैं। वे अपने गाँवों और समुदायों में एकजुट होकर रहते हैं और अपनी पारंपरिक गतिविधियों जैसे खेती, मचान बनाना, झारखंडी नृत्य, और अन्य कला रूपों के माध्यम से अपनी संस्कृति का उत्सव मनाते हैं। मुंडा जी ने आदिवासी समाज के विभिन्न पहलुओं की महत्वपूर्णता को रेखांकित किया, जैसे उनकी पारंपरिक खेती, वन्य जीवन के साथ उनका सामंजस्यपूर्ण

@2025 Bihar Shodh Samaagam

संबंध, उनके नृत्य और गीत, और उनके पारंपरिक धार्मिक विश्वास। वे मानते थे कि इस जीवनशैली को संरक्षित किया जाना चाहिए क्योंकि यह न केवल झारखंड की संस्कृति को पहचान देता है, बल्कि पूरी दुनिया को यह सिखाता है कि कैसे मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखा जा सकता है।

- **आदिवासी संघर्ष और झारखंड राज्य की आवश्यकता:** रामदयाल मुंडा ने हमेशा आदिवासी समुदायों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनका यह मानना था कि झारखंड के आदिवासी समाज को न्याय, सम्मान और अधिकार मिलना चाहिए। इसके लिए उन्होंने झारखंड राज्य के गठन की आवश्यकता को महसूस किया और इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाई। उनका मानना था कि जब तक झारखंड को एक पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं मिलेगा, तब तक आदिवासी समुदाय के विकास के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जा सकते। झारखंड राज्य के गठन में उनके योगदान ने यह सिद्ध कर दिया कि आदिवासी और स्थानीय संस्कृति के सम्मान और संरक्षण के लिए एक समर्पित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। उनके संघर्ष ने न केवल झारखंड के आदिवासी समाज को एक मजबूत आवाज दी, बल्कि यह भी दिखाया कि आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष कितना महत्वपूर्ण है।
- **संस्कृति और आधुनिकता का संतुलन:** रामदयाल मुंडा का मानना था कि संस्कृति और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखना बहुत आवश्यक है। उन्होंने यह माना कि यदि हम अपनी पारंपरिक संस्कृति को छोड़ देंगे, तो हम अपनी पहचान खो देंगे। लेकिन इसके साथ ही, उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि आधुनिकता के साथ जुड़ने की आवश्यकता है। उनका यह कहना था कि हमें अपनी संस्कृति को बचाए रखते हुए, समाज के साथ तालमेल बिठाते हुए समग्र विकास की ओर बढ़ना चाहिए। मुंडा जी ने यह महसूस किया कि शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में विकास आवश्यक है, लेकिन यह विकास हमारी संस्कृति और परंपराओं के खिलाफ नहीं होना चाहिए। वे मानते थे कि आधुनिकता को अपनाते हुए, हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों को भी संरक्षित रखना चाहिए। यही कारण था कि उन्होंने आदिवासी शिक्षा, समाज सुधार और संस्कृति के संरक्षण के लिए कई कार्यक्रमों का आयोजन किया।

❖ **निष्कर्ष**

रामदयाल मुंडा का जीवन झारखंड की संस्कृति के संरक्षण और आदिवासी अधिकारों के लिए संघर्ष का प्रतीक बन गया है। उन्होंने अपनी मेहनत और समर्पण से यह साबित कर दिया कि यदि हम अपनी संस्कृति, परंपराओं और पहचान को न भूलकर, उन्हें संरक्षित रखते हुए विकास की दिशा में कदम बढ़ाते हैं, तो हम समृद्ध और प्रगतिशील समाज की स्थापना कर सकते हैं। उनकी दृष्टि ने न केवल झारखंड बल्कि पूरे भारत को यह सिखाया कि विकास के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक धरोहर को भी बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। उनकी संकल्पना के अनुसार, झारखंड की संस्कृति, समाज और आदिवासी जीवन शैली को सम्मान देने से ही एक सशक्त और प्रगतिशील राज्य का निर्माण संभव है।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

❖ **सन्दर्भ ग्रंथ-सूची**

1. मुंडा, रामदयाल, 'आदि-धर्मं ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 52
2. मुंडा, रामदयाल, 'आदि-धर्मं ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 196
3. मुंडा, रामदयाल, 'आदि-धर्मं ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 320
4. मुंडा, रामदयाल, 'आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल ', रामबुल प्रकाशन, रांची, पृष्ठ संख्या- 76
5. मुंडा, रामदयाल, 'आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल ', रामबुल प्रकाशन, रांची, पृष्ठ संख्या- 76
6. मुंडा, रामदयाल, 'आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल ', रामबुल प्रकाशन, रांची, पृष्ठ संख्या- 84
7. मुंडा, रामदयाल, 'आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल ', रामबुल प्रकाशन, रांची, पृष्ठ संख्या- 102

@2025 Bihar Shodh Samaagam